शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

भारत-चीन संघर्ष : रक्षण की हमारी योजना

विनोबा

इस समय हमारा देश गंभीर परिस्थिति में है। चीन का आक्रमण भारत पर हो रहा है और भारत कहता है कि बचाव के लिए लड़ना लाजिमी है। दोनों देशों में एक तरह से लड़ाई ही चल रही है। चीन कहता है हमारे प्रदेश पर ही भारत का आक्रमण हुआ है। इस तरह आरोप-प्रत्यारोप किए जा रहे हैं। किसके आरोप में क्या तथ्य है, क्या नहीं, इसका निर्णय सामान्य नागरिक नहीं कर सकते। लेकिन मेरी समझ में एक बात नहीं आती। भारत की ओर से पंडित जी ने एक सुझाव दिया था कि दोनों देशों के दावे जिस प्रदेश पर हैं, उतने प्रदेश से दूसरे का ताबा (अधिकार) हट जाए, उसके बाद बातचीत चले, आवश्यक हो तो मध्यस्थ का भी उपयोग किया जाए और फैसला हो। जब ऐसा सुझाव भी नहीं माना जाता, तो मेरे जैसे तटस्थ मनुष्य के चित्त पर भी असर पड़ता है ओर लगता है कि भारत पर यह लड़ाई लादी जा रही है। इस तरह से आक्रमण होता रहेगा तो कोई देश सहन नहीं कर सकता, बल्कि सहन करने से देश आगे नहीं जा सकता।

युद्ध का जमाना अब नहीं रहा, यह सब समझते हैं। फिर भी लोग अपने छोटे-छोटे नजरिये रखते हैं। उनको छोड़ने के लिए वे तैयार नहीं होते और लड़ाइयां छेड़ देते हैं। इसके बहुत भयानक परिणाम हो सकते हैं। इसलिए मैं परमेश्वर से प्रार्थना करूंगा कि यह जो सुझाव पेश किया गया है, वह मान्य करने की सद्बुद्धि भगवान उनको दे। और कोई उपाय सुझाना हो तो वह सुझाया जाए और उस पर विचार हो। लेकिन लड़ाई तो बंद होनी चाहिए।

खैर, दोनों सरकारों को परमेश्वर जो बुद्धि देगा, वह होगा। लेकिन हमें सोचना चाहिए कि इस वक्त हमारा कर्तव्य क्या है ?

ऐसी हालत में क्या हम घबरा जाएंगे ? क्या सेना में भरती हो जाने से काम हो जाएगा ? मरने के लिए आपके पा जितने लोग हैं, उससे चीन के पास कम नहीं हैं। पर एक बात निश्चित है कि इन दोनों देशों की लड़ाई से दोनों राष्ट्रों के गरीब मर जाएंगे। चीन क्या सोचता होगा, मालूम नहीं। उसके क्या-क्या रिसोर्सेस हैं, कहां-कहां से उसको क्या मदद मिलेगी, हम नहीं जानते। पर भारत का संबंध बाहरी दुनिया से है। उसके लिए आवश्यक चीजें, अन्न भी बाहर से आता है। लड़ाई छिड़ेगी तो भारत के लिए बाहर से अनाज आना मुश्किल होगा। यह हमें सोचना है।

ग्रामदान की स्थायी योजना

मैंने कई दफा कहा है कि हमारी पंचवर्षीय योजना में हम यह मानकर चले हैं कि दुनिया में शांति रहेगी। दुनिया में शांति की आशा रखते हुए उसके आधार पर ही हमारी योजनाएं बनायी गयीं। लेकिन यदि दुनिया में अशांति हुई और भारत के ही नजदीक अशांति हुई, तो क्या होगा ? हमारे आयात-निर्यातों में बाधा पहुंचेगी। हमारे व्यवसाय-वाणिज्य को धक्का लगेगा। तब योजना का क्या होगा ? उसकी जरूरतें पूरी नहीं होंगी और योजनाएं गिरेंगी। आज की योजनाएं अशांति के समय कुछ काम नहीं आ सकती हैं। लेकिन

हमारा ग्रामदान का जो विचार है, वह शांति के समय तो चलेगा ही, अशांति हो तब भी चलेगा। इतना ही नहीं अशांति के समय उसके सिवा और कोई उपाय नहीं है। जब आयात-निर्यात बंद होगा, बाहर से चीजें नहीं आयेंगी और योजनाएं स्थगित हो जाएंगी तो गांवों की क्या हालत होगी ? उनको कैसे बचाया जाए ? इसमें गांवों को सैनिक आक्रमण से नहीं, आर्थिक आक्रमण से बचाने की बात है।

आज चीजों के भाव काफी बढ़ गए हैं। कहते हैं कि जनतांत्रिक ढंग से आर्थिक उन्नति करते समय भाव चढ़ेंगे। पर रोजमर्रा की आवश्यक चीजों के और गरीबों के लिए भी आवश्यक चीजों के भाव चढ़ रहे हैं। लोगों को वे चीजें खरीदना कठिन हो रहा है। इससे देश की बुनियाद ही ढह जाती है। अगर आवश्यक चीजों के दाम सामान्य लोगों की पहुंच में न रहें तो देश की आर्थिक व्यवस्था ही टूटेगी। उस समय गांव की स्थिति क्या होगी ? इसलिए गांव के लिए आवश्यक चीजें, उन्हें गांव में ही पैदा कर लेना पड़ेगा, गांव में ही रख लेना पड़ेगा। जिंदा रहने के लिए रोटी, शील रखने के लिए कपड़ा, बच्चों को दूध, बीमारों को दवा, इन चीजों के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रह सकते। इन मुख्य चीजों में तो हर गांव स्वावलंबी होना चाहिए। (शोभा नगर, 22-10-1962, चीन-भारत संघर्ष और हमारा कर्तव्य (सर्वोदय दृष्टिकोण)